Philosophy
Explore – Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

कर्म और भाग्य : एक दार्शनिक विश्लेषण

प्रिया कुमारी तिवारी • हिन्दुजा भारती श्री • अनुप्रिया सिंह
कुमकुम रानी

Received : December 2010
Accepted : February 2011
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : *चार्वाक को छोड़कर शेष सभी भारतीय दार्शनिक कर्म के नियम में आस्था रखते है। कर्म का नियम नैतिकता के क्षेत्र में काम करने वाला कारण नियम ही है। इसका अर्थ यह है कि शुभ कर्म का फल अनिवार्यत: शुभ होता है और अशुभ कर्म का फल अनिवार्यत: अशुभ होता है । अच्छा काम आत्मा में पुण्य पैदा करता है जो कि सुख भोग का कारण बनता है। बुरा काम आत्मा में पाप पैदा करता है जो कि दु:ख भोग का कारण बनता है। सुख और दु:ख क्रमश: शुभ और अशुभ कर्मों के अनिवार्य फल है। इस नैतिक नियम की पकड़ से कोई भी नहीं छूट सकता । शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कर्म सूक्ष्म संस्कार छोड़ जाते है जो निश्चय ही भावी सुख-दुख के कारण बनते हैं । वे अवश्य ही फल पैदा करते हैं । इन फलों का भोग इस जन्म में निकट या सुदूर भविष्य में किया जाता है या आगामी जन्मों में किया जाता है ।*

कर्म के नियम का बीज रूप ऋग्वेद के 'ऋत' की धारणा में मिलता है । उपनिषदों में तो कर्म के नियम की स्पष्टत: नैतिक नियम के रूप में धारणा दी गई है । बृहदारण्यक और छान्दोग्य उपनिषदों में कहा गया है कि मनुष्य शुभ कर्म करने से धार्मिक बनता है और अशुभ कर्म करने से पापी । संसार जन्म और मृत्यु का एक अनन्त चक्र है मनुष्य अच्छे कर्म करके अच्छा जन्म पा सकता है और आत्मा का सच्चा ज्ञान प्राप्त करके संसार से मुक्त हो सकता है। न्याय वैशेषिक, सांख्य योग, मीमांसा और वेदान्त भी कर्म के नियम में आस्था रखते हैं ।

दैव एक अदृश्य शक्ति है । यह 'अदृष्ट' है । इसका यह अर्थ नहीं कि दैव कोई अद्‌भूत शक्ति है। पूर्व जन्मों के संचित धर्मों को ही दैव कहा जाता है । अत: जब हम दैव को किसी कर्म का कारण बतलाते हैं तो उसका अर्थ है कि हमारे चेतन प्रयत्नों द्वारा वह कर्म नहीं हुआ अपितु वह अदृश्य शक्तियों का फल है अर्थात् हमारे कर्मों का फल है ।

कर्मों की निश्चयता और उसके फल के संबंध में दो मत है। एक जो कर्मों को निश्चित करने में और उसके फल के विषय में दैव का प्रभाव बतलाता है, दूसरा जो पुरुषकार अर्थात मानव प्रयत्नों का ही प्रभाव मानता है। पहले मत को भाग्यवाद भी कहा जाता है और दूसरे को स्वच्छन्दतावाद । भाग्यवाद के अनुसार ईश्वर ने जैसा निश्चित किया है या भाग्य में जो पहले से लिखा हुआ है वैसे ही कर्म होंगे मनुष्य के और उसका वैसा ही फल होगा । अत: किसी उद्देश्य की प्राप्ति में सफलता मिलेगी अथवा नहीं, यह पहले से निश्चित है । मनुष्य के प्रयत्नों का इसमें कोई मूल्य नहीं है । जो वदा है वही होगा । हमारा संकल्प स्वतन्त्र नहीं है। भाग्यवादी पूर्व-कर्मफल का महत्त्व भी बतलाते हैं ।

प्रिया कुमारी तिवारी
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

हिन्दुजा भारती श्री
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

अनुप्रिया सिंह
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2008-2011,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

कुमकुम रानी
Assistant Professor, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : drkumkumrani@gmail.com

यह जानने हेतु कि कितने लोग अपनी सफलता असफलता का कारण कर्म को मानते है और कितने भाग्य को इसी उद्धेश्य से हमने इस योजना कार्य का संपादन किया। इस योजना कार्य के अंतर्गत एक सर्वेक्षण किया गया जिसमें पटना के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न वर्गो का साक्षात्कार किया गया। साक्षात्कार के परिणाम स्वरूप यह पता चला कि 30 में से 20 व्यक्ति कर्म को मानते हैं 8 व्यक्ति भाग्य को तथा 2 व्यक्ति तटस्थ पाए गये।

इस शोध कार्य के द्वारा हम यह बताना चाहते हैं कि कर्म से ही भाग्य का निर्माण होता है। कर्म की उपेक्षा कर हम जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते है। यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण में अहम् भूमिका निभाता है। यदि मानव कर्म के महत्व को समझ जाए तो इस समाज में बदलाव आना असंभव नहीं है।

Key words :- *कर्मशीलता, भाग्य, कर्म, धार्मिक, मानवीय ।*

परिचय :

मनुष्य का प्रत्येक कर्म विश्व-उर्जा में स्पंदन उत्पन्न करता है और यह स्पंदन या अशांति पूर्णव्यापी होती है। जिस प्रकार किसी जलाशय में एक कंकड़ डालने से समस्त जलराशि में लहर उत्पन्न होती है और वह लहर लौटकर उसी स्थान पर शान्त हो जाती है जहाँ कंकड़ डाला गया था इसी प्रकार प्रत्येक कर्ता को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है । कर्म के संबंध में सामान्यतः उपरोक्त विचार सर्वमान्य है। मानवीय जीवन चक्र कर्मशील होता है। यूँ तो कर्मशीलता सभी सजीवों की मुख्य विशेषता है लेकिन मनुष्य अपनी विवेकशीलता के कारण शुभ और अशुभ कर्मों का भेद कर पाता है तथा अपने जीवन को उन्नत एवं समृद्ध बनाने के लिए आजीवन कर्म करते रहता है। कर्म के अभाव में मनुष्य इस जगत में अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता है। कर्म का संबंध हमारे जीवन के सभी पहलुओं से है। अगर हम एक उत्कृष्ट जीवन जीना चाहते हैं तो वह हमें उत्कृष्ट कर्म के परिणाम के रूप में ही प्राप्त हो सकता है। कर्म सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा नैतिक महत्व रखता है लेकिन इसके बावजूद बहुत से लोग भाग्य में अधिक विश्वास करते हैं फलस्वरूप समाज में अकर्मण्यता का निवास होने लगता है और यह मानव सभ्यता के लिए घातक है। इसलिए भाग्य में विश्वास करने वालों को हमें यह बताना होगा कि कर्म में विश्वास करो क्योंकि अकर्मण्यता का भाग्य भी साथ नहीं देता । कर्म में विश्वास किए बिना समाज का कल्याण संभव नहीं है। अगर व्यक्ति कर्म सिद्धांत में विश्वास कर अपना कार्य करे तो जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी।

कर्म अर्थात् क्रिया - यह विश्व क्रियाशील है। भौतिक शास्त्र के अनुसार गतिशीलता ही कर्म का परिचायक है। इस विश्व में गति है अतः कर्म के बिना विश्व का अस्तित्व नहीं है। मानव दर्शन कहता है कि कर्ममय जीवन ही सफल जीवन है। विश्व की गतिशीलता अविच्छिन्न है तथा इसकी विभिन्न कड़ियाँ कारण एवं परिणाम के पारस्परिक संबंध द्वारा संबद्ध है । भारतीय दर्शन के कर्म-सिद्धांत भी यही कहता है कि मनुष्य जैसा करेगा उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा । शुभ-कर्मों का फल शुभ तथा अशुभ कर्मों का फल अशुभ होगा । भारतीय दर्शन यह भी कहता है कि जो कर्म किए गए हैं उसके फल अवश्य प्राप्त होंगे लेकिन जो कर्म नहीं किए गए उसके फल प्राप्त नहीं सकते । इसे क्रमशः ''कृतप्रणाश'' और ''अकृतभ्युपगम'' नाम दिया गया है। कर्म के फल की अनिवार्यता को मानने के कारण कर्म-सिद्धांत कारण-नियम बन जाता है जो नैतिकता के क्षेत्र में कार्य करता है। जिस प्रकार भौतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या कारण नियम करता है उसी प्रकार नैतिक क्षेत्र में निहित व्यवस्था की व्याख्या कर्म-नियम करता है ।

सामान्य रूप में माना जाता है कि कोई व्यक्ति जितने शुभ या अशुभ कर्म करता है उसे उसी अनुपात में परिणाम स्वरूप पुरस्कार या दण्ड भोगना पड़ता है । जीवन की अविच्छिन्नता के कारण एक जन्म के कर्मों के फल दूसरे जन्म में प्राप्त किये जा सकता है। मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके अतीत के कर्मो का परिणाम है और वर्तमान जीवन के कर्म उसके भविष्य के जीवन को निर्धारित करते हैं। कर्म के सिद्धान्त का यह रूप अपनी सीमा के अन्दर पूर्णतया युक्ति पूर्ण एवं आपत्ति रहित है। कर्म फल प्राप्ति की दृष्टि से कर्म का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है:-

(1) **संचित कर्म** :- यह अतीत का कर्म है जिसका फल अभी नहीं मिला है।

(2) **प्रारब्ध कर्म** :- यह पूर्वकृत कर्म है जिसका फल मिलना शुरू हो गया है।

(3) **संचीयमान कर्म** :- वर्तमान जीवन का कर्म है जिसका फल भविष्य में मिलेगा।

वास्तव में जिन कर्मों का फल हम वर्तमान में प्राप्त करते हैं उसे ही भाग्य कहा जाता है क्योंकि वर्तमान कर्म के साथ उसका मेल नहीं हो पाता है और अतीत के कर्म को हम जानते नहीं ।

उद्धेश्य :

- यह जानना कि विभिन्न व्यक्ति अपने जीवन की सफलता और असफलता का कारण किसे मानते है कर्म को या भाग्य को।

- यह बताना कि कर्म एवं भाग्य दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए है।
- यह समझाना कि उचित कर्म करने से ही हमारे देश एवं समाज का विकास होगा।
- यह बताना कि जैसा कर्म करते है वैसा ही फल पाते है। इसके लिए ईश्वर को दोष देना गलत है।

विधि :

शोध हेतु हमने प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि को अपनाया है। इस विधि में हमने अपने विषय से संबंधित 30 प्रश्नों की सूची रखी है। जिसमें कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिसमें भाग्य और कर्म दोनों में कौन महत्वपूर्ण है इससे संबंधित है। इन प्रश्नों के माध्यम से आज के सभी वर्ग तथा उम्र के लोगों के विचारों को जानने का प्रयास किया है। इसके लिए हमने विभिन्न पुस्तकालयों से एकत्रित सामग्री, सामाचार पत्रों से विचारों को एकत्रित किया है।

प्रश्नावली :

नाम :
उम्र :
लिंग :
पेशा :

1. क्या अच्छे कर्म का फल अच्छा तथा बुरे का बुरा होता है ?
2. आपकी सफलता का कारण, कर्म है या भाग्य?
3. आपकी असफलता का कारण, कर्म है या भाग्य ?
4. व्यक्ति किससे महान बनता हैं, कर्म से या भाग्य से?
5. क्या कर्म भाग्य पर निर्भर है?
6. बिना कर्म के भाग्य अच्छा हो सकता है ?
7. क्या हमारा भविष्य आज के कर्म पर निर्भर है?
8. वर्तमान में भोग रहे फल का कारण पूर्व जन्म का कर्म है? अच्छे कर्मों का फल बुरा तथा बुरे कर्मों का फल अच्छा इसका कारण क्या होगा?
9. अच्छे कर्मों का फल बुरा तथा बुरे का अच्छा इसका कारण किसे कहेंगे ?
10. हमारे साथ हुई घटनाएँ क्या पहले से लिखी हुई है?
11. समाज में जो विषमता है, उसका कारण हम किसे मानेगें – कर्म को या भाग्य को?
12. अपने लक्ष्य की सफलता और असफलता के लिए हम किसे दोष देगें?
13. क्या फल की प्राप्ति बिना कर्म किए प्राप्त कर सकती हैं?
14. कर्मों के अनुसार क्या सबको फल मिलता हैं?
15. कर्म से क्या भाग्य बदला जा सकता हैं?
16. भाग्य का निर्माण क्या ईश्वर ने किया हैं?
17. क्या कर्म और भाग्य दोनों महत्वपूर्ण है?
18. क्या लक्ष्य की प्राप्ति में कर्म सहायक है?
19. क्या हमें कर्म करने की स्वतंत्रता है?
20. महापुरूष कर्म से महान बने हैं या भाग्य से?

अनुसंधान :

अनुसंधान कार्य हेतु हमने 30 लोगों से प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार किया, जिसमें प्रत्येक वर्ग तथा हर उम्र के लोग आते हैं।

अनुसंधान से हमे पता चला है कि पहले प्रश्न में 28 लोगों ने माना है कि अच्छे कर्म का फल अच्छा तथा बुरे कर्म का फल बुरा मिलता है। तथा 2 लोगों ने इस बारे में अपना मत नहीं रखा है।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में भी 26 लोगों ने अपनी सफलता का कारण कर्म को माना है तथा 4 लोगों ने भाग्य को माना है।

तीसरे प्रश्न में 21 लोगो ने अपनी असफलता का कारण कर्म को माना है तथा 9 लोगों ने भाग्य को अपनी असफलता का कारण माना है।

चौथे प्रश्न में 1 व्यक्ति को छोड़कर सभी ने कर्म को महान माना है।

पाँचवें प्रश्न में 7 लोगों ने यह माना कि कर्म भाग्य पर निर्भर करता है। बाकी सभी ने माना कि कर्म भाग्य पर निर्भर नहीं है।

छठे प्रश्न के उत्तर में केवल 2 लोगों ने यह माना कि बिना कर्म के भी भाग्य अच्छा हो सकता है, अन्य सभी लोगो ने माना कि बिना कर्म के भाग्य अच्छा नहीं हो सकता।

सातवें प्रश्न के उत्तर में 26 लोगों का मत है कि हमारा भविष्य आज के कर्म पर निर्भर है।

आठवें प्रश्न के उत्तर में 7 लोगों ने माना है कि वर्तमान में जो फल हम भोग रहे हैं वे हमारे पिछले जन्म के कर्मों का परिणाम है। 16 लोगों ने पिछले जन्म को स्वीकार नहीं किया है। तथा 7 लोगो नें अपना मत व्यक्त नहीं किया है।

नौवें प्रश्न में 2 लोगों ने अच्छे कर्मों का परिणाम बुरा तथा बुरे कर्मो का परिणाम अच्छा होने का कारण कर्म को माना है तथा 17 लोगों ने भाग्य को और 11 लोगों ने अपना मत व्यक्त नहीं किया है।

दसवें प्रश्न में 11 लोगों ने माना है कि जो हमारे साथ घटनाएँ घटती है वो पहले से लिखी हुई है तथा 16 लोगों ने कहा कि घटनाएँ पहले से लिखी हुई नही है तथा 3 लोगों को इस बारे में नहीं पता है।

ग्यारहवें प्रश्न में 14 लोगों ने समाज में विषमता का कारण भाग्य को तथा 16 लोगों ने कर्म को माना है।

बारहवें प्रश्न मे 20 लोगों ने कर्म को अपने लक्ष्य तक नही पहुँचने का कारण माना है तथा 9 ने भाग्य को तथा एक को इसके बारे में पता नहीं ।

तेरहवे प्रश्न में लगभग सभी ने माना है कि बिना कर्म किए फल की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

चौदहवें प्रश्न में 16 लोगों ने माना है कि सभी को कर्म के अनुसार फल मिलता है तथा 11 लोगों ने माना है कि सभी को कर्म के अनुसार फल नहीं मिलता है। 3 लोगों ने अपना स्पष्ट मत नहीं दिया।

पंन्द्रहवें प्रश्न में 27 लोगो ने माना कि हम अपने कर्म से भाग्य को बदल सकते हैं। तथा 3 लोगों ने माना कि कर्म से भाग्य नहीं बदला जा सकता।

सोलहवें प्रश्न में 18 लोगो ने माना है कि भाग्य का निर्माण ईश्वर ने किया है, 5 लोगो ने कहा कि नहीं पता है तथा 7 लोगों ने माना है कि भाग्य का निर्माण ईश्वर ने नहीं किया है।

सतरहवें प्रश्न में 29 लोगों ने माना है कि मनुष्य के जीवन में कर्म तथा भाग्य दोनों महत्वपूर्ण है। मगर 01 ने ऐसा नहीं माना ।

अठारहवें प्रश्न में 19 लोगों ने कर्म तथा भाग्य दोनों को लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक माना है। 9 लोगों ने केवल कर्म को तथा 2 ने केवल भाग्य को माना है।

उन्नीसवें प्रश्न में 29 लोगों ने माना कि मनुष्य को कर्म करने की स्वतंत्रता है। मगर एक ने ऐसा नहीं माना ।

बीसवें प्रश्न में 27 लोगों ने माना कि जो महापुरूष हैं वे कर्म से महान बने हैं तथा 3 लोगों ने भाग्य को माना है।

अतः प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि के द्वारा प्राप्त उत्तर का अध्ययन करने पर हमने देखा कि 30 लोगों में अधिकतर लोगों ने कर्म को प्रधान माना है। गणितीय रूप से निरूपित करके किया जाए तो इसकी संख्या 90 प्रतिशत है।

प्रस्तावना :

- आधुनिक समाज में मानवीय संवेदना तथा मूल्य धाराशाही हो रहे हैं।
- आधुनिकता और भौतिकता के युग में भले आगे बढ़ गए हो परन्तु मानसिकता में कुछ भी बदलाव नहीं दिखता है।
- आज भी हमारा समाज अंधविश्वास, कुंठाओं और कुरीतियों का शिकार हो रहा है।
- कर्म और भाग्य का द्वन्द आज भी चल रहा है।

निष्कर्ष :

गीता का कहना है कि कर्म ही के द्वारा हमारा समस्त संसार के साथ सम्बन्ध स्थिर होता है । इस मृत्युलोक में विश्राम नहीं है, यहाँ तो जीवन भर कर्म करते रहना चाहिए। कर्म ही संसार चक्र की गति को जारी रखता है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर से पूरा प्रयत्न इसकी गति को जारी रखने में करना चाहिए ।

गीता आदेश करती है कि हम इस प्रकार कर्म करे कि कर्म हमें बन्धन में न जकड़ सके । गीता में प्रतिपादित भाव से जो कर्म किया जाता है उसकी पूर्ति ज्ञान में होती है। अहंकार के भाव को दूर करके दैवीय भाव को जगाना चाहिए। कर्ममार्ग हमें एक ऐसी दशा को प्राप्त कराता है जहाँ भावना, ज्ञान और इच्छा सब विद्यमान रहते हैं । अतः सेवा का मार्ग या निष्काम कर्म का मार्ग ही मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। गीता में कर्मयोग में प्रवृति और निवृति का अदभुत समन्वय किया है। गीता कर्म का निषेध नहीं करती कर्म में फलासक्ति या कामना का निषेध करती है। वासना, कामना आसक्ति या फलाकांक्षा कर्त्ता को बन्धन में बाँधता है। इन्हें निकाल देने पर कर्म में बाँधने की शक्ति नहीं रह जाती। गीता कर्म फल के त्याग की बात करता है । गीता की सुप्रसिद्ध उक्ति है – कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

अर्थात् तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, कर्म फल में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं, अतः तुम कर्म फल की कामना या फलासक्ति मत करो, और न ही तुम्हारी प्रवृत्ति कर्म न करने में हो ।

मनुष्य के जीवन में कर्म का सर्वाधिक महत्व है। कर्म करने का मतलब यह नहीं कि हम अनैतिक कर्म करें

बल्कि हमें ऐसे कर्म करना चाहिए जो नैतिक एवं उचित हो। नैतिक एवं उचित कर्म करने से हमारा तथा हमारे देश का विकास संभव है। व्यक्ति अपने जीवन को उन्नत एवं समृद्ध बनाने के लिए आजीवन कर्म करता है और उसकी कर्मशीलता ही उसे उन्नत अवस्था तक पहुंचाती है। मानवीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला, धर्म-दर्शन, विज्ञान आदि सभी इसी कर्मशीलता के परिणाम है। कर्म के अभाव में व्यक्ति अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता। कर्म व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण एवं सार्थक है।

सुझाव :

शिक्षित और, विकासशील देश होने के वावजूद भी आज हमारे देश में कई ऐसे लोग है जो अंधविश्वास में पड़े है और यह मानते है कि भाग्य से ही कर्म का निर्माण होता है या भाग्य को ही जीवन में घटित घटनाओं का कारण मानते है।

इस शोध कार्य के द्वारा हम उन लोगों को यह बताना चाहते हैं कि कर्म से ही भाग्य का निर्माण होता है। अच्छे कर्मों का परिणाम अच्छा तथा बुरे कर्मों का परिणाम हमेशा बुरा होता है। इसलिए व्यक्ति को हमेशा अच्छा कर्म करना चाहिए ताकि उसका भाग्य अच्छा हो।

भाग्य के भरोसे बैठे रहने से व्यक्ति निष्क्रिय और आलसी हो जाता है। यदि कोई व्यक्ति अच्छा कर्म करता है और फिर भी उसे बुरा परिणाम मिलता है तो इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति अपने कर्म में कहीं न कहीं गलत होगा अत: इसके लिए भाग्य को दोष देना सर्वथा गलत है। कर्म से व्यक्ति महान बनता है, लक्ष्य को प्राप्त करता है भाग्य से नहीं। अत: हम कह सकते है कि भाग्य भी उसी का साथ देता है जो कर्मी है, अकर्मी का साथ भाग्य नहीं देता है।

ग्रन्थ सूची :

References :

डा॰ राधाकृष्णन (2004), भारतीय दर्शन, प्रथम खण्ड, राज्यपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली ।

झा अनिरूद्ध एवं मिश्र रामनन्दन (1994) आचारशास्त्र के मूल सिद्धान्त :- तृतीय संशोधित संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास।

लाल बसंत कुमार (1995) समकालीन भारतीय दर्शन, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।

मिश्र हृदय नारायण, नीतिशास्त्र के भूमिका (1993), हरियाणा साहित्य आकादमी, चंडीगढ़ ।

सिंह बी॰ एन॰ (1993), भारतीय दर्शन, स्टूडेण्ट्स फ्रेण्डस एण्ड कम्पनी, वाराणसी-5

सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद (1993), भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली ।

सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद (1998) धर्मदर्शन की मूल समस्या, मोतिलाल बनारसी दास, दिल्ली।

सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद, (1999), भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

वर्मा अशोक कुमार, नीतिशास्त्र की रूपरेखा (1998), मोतीलाल बनारसी दास ।

वर्मा वेदप्रकाश, धर्मदर्शन की मूल समस्या (2009), हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

गीता, 3:10, 16 ।